शुल्क १५ वर्ष
३१००/- रुपये

विज्ञप्ति

एक प्रति १०/- रुपये
वार्षिक ३००/- रुपये

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष २३ : अंक ५ : नई दिल्ली : २८ अप्रेल-४ मई २०१७

परम पावन आचार्यश्री महाप्रज्ञजी की सातवीं वार्षिक पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में

परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण द्वारा रचित और समुच्चारित गीत

बालूनन्दन को मेरा वन्दन सविनय।
प्रज्ञा स्पन्दन को अभिवन्दन हो अक्षय।।

तेरापथ के दशम गणेश्वर संयमरत्न प्रदाता।
वत्सलता की वर्षा करते भैक्षव शासन त्राता ।।१।।

आगम सम्पादन कर जिन शासन की सेवा साधी।
ज्ञान सिन्धु में कर अवगाहन श्रुतदेवी आराधी ।।२।।

प्रेक्षा का नव दीप जलाकर ध्यान रोशनी बांटी।
समता शुभ साधन से निकले राग-रोष की कांटी ।।३।।

जीवन का विज्ञान बताकर शिक्षा को सरसाया।
संस्कारित हो भावी पीढ़ी पा आध्यात्मिक साया ।।४।।

योग साधना से संबंधित यह 'मुंगेर' नगर है।
जैन योग पुनरुद्धारक की प्रेक्षाध्यान डगर है ।।५।।

गुरुवर महाप्रज्ञ की सप्तम वार्षिक तिथि का अवसर।
'महाश्रमण' स्वाध्यायशीलता से बन जाएं श्रुतधर ।।६।।

लय-पालय-पालय रे....

कठिनाइयों से हिम्मत न हारें

१२ अप्रेल। परमाराध्य आचार्यप्रवर ने प्रातः राजगीर स्थित वीरायतन से गिरियक आदमपुर की ओर प्रस्थान किया। आचार्य चन्दनाजी की शिष्या साध्वी शुभंजी ने आचार्यप्रवर के प्रति कृतज्ञता और मंगलकामना अर्पित की। पूज्यप्रवर ने आचार्य चन्दनाजी के प्रति शुभकामना अभिव्यक्त की। विहार मार्ग के परिपार्श्व में स्थित 'वेणुवन' को पूज्यप्रवर ने दूर से निहारा। कहा जाता है कि वेणुवन महात्मा बुद्ध की साधना स्थली है, वे जब राजगृह आते तो यहीं प्रवास करते। पांडु पोखर के समीप लगी पांडु की मूर्ति भी पूज्यप्रवर की दृष्टि का विषय बनी।

मार्ग के दांयी ओर स्थित श्री निर्मल नाहटा के अस्थाई निवास स्थान में राष्ट्रीय अणुव्रत शिक्षक संसद संस्थान द्वारा अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र का उद्घाटन किया गया। पूज्यप्रवर इस संदर्भ में वहां पधारे। अणुव्रत शिक्षक संसद संस्थान के अध्यक्ष श्री तनसुखलाल बैद और श्री साधुशरण सिंह सुमन ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम में परम पूज्यप्रवर ने भी अपना संक्षिप्त उद्बोधन प्रदान किया।

मार्ग के परिपार्श्व में स्थित पहाड़ के ऊपरी भाग में गौतमबुद्ध २५००वीं जन्मजयंती के संदर्भ में निर्मित विश्वशांति स्तूप के विषय में लोगों ने आचार्यप्रवर के समक्ष अवगति प्रस्तुत की। प्रखरता लिए हुए सामने की ओर स्थित सूर्य आचार्यप्रवर के तन को स्वेद बिन्दुओं से नहला रहा था, किन्तु आचार्यप्रवर का समत्व अबाधित ही रहा। लोहियानगर स्थित प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थी आचार्यप्रवर के दर्शन और मंगल प्रेरणा से लाभान्वित हुए। त्रिशेश्वरनगर के एक ग्रामीण ने अपनी पीड़ा आचार्यप्रवर के समक्ष रखी तो पूज्यप्रवर ने उसे मंत्र प्रदान किया। मार्ग के दायीं ओर स्थित आयुध डिपो के विशाल परिसर के पहाड़ों पर लगाई गई आग को आचार्यप्रवर ने अपने नयनों से निहारा। दो दिनों से आयुध डिपो परिसर पहाड़ों पर यत्र-तत्र उठ रही ये आग की लपटें प्रथम दर्शन में किसी को भयभीत बना सकती है, किन्तु इसकी मूल वजह जानने के बाद भय स्वतः शांत भी हो सकता है। बताया गया कि पहाड़ों को उर्वर बनाने की दृष्टि से यह आग लगाई गई है।

गंतव्य स्थल के निकट एक मोड़ से नवादा सत्रह किमी, गुणायांजी सोलह किमी, कोडरमा बासठ किमी और बिहारशरीफ तीस किमी है। बताया गया कि गुणायांजी में गणधर गौतम स्वामी का केवलज्ञान प्राप्ति स्थल जल मंदिर के रूप में निर्मित है। नवादा में तेरापंथ समाज के चार, कोडरमा में सात और बिहारशरीफ में एक परिवार है। वहां के श्रद्धालुओं ने मोड़ पर पूज्यप्रवर के दर्शन किए तो आचार्यप्रवर ने कुछ क्षण वहां आसीन होकर उन्हें उपासना का अवसर प्रदान किया। करीब १४.० किमी का विहार परिसंपन्न कर आचार्यप्रवर गिरियक आदमपुर स्थित हाजी निसारुद्दीन हरिजन उच्च विद्यालय में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'जीवन में दृढ़ संकल्प का बहुत महत्त्व होता है। दृढ़ संकल्प वाले व्यक्ति के लिए क्या कार्य दुष्कर हो सकता है। दृढ़ संकल्प अपने आप में एक शक्ति होती है। दृढ़ संकल्प अच्छे कार्य के लिए भी किया जा सकता है तो बुरे कार्य के लिए भी हो सकता है। अच्छे कार्य के लिए किया जाने वाला संकल्प प्रशस्त होता है। जीवन में कष्ट आ सकते हैं, उनमें मनोबल रहे, संकल्पबल और समता भाव रहे, यह खास बात होती है। सामने से कितनी भी तेज हवा आए, सुदर्शन गिरि को कौन हिला सकता है? जीवन में ग्रहण किए हुए त्याग, शुभ संकल्पों को दृढ़ता के साथ निभाना चाहिए। किसी-किसी संकल्प के लिए तो इतनी दृढ़ता होनी चाहिए कि प्राण भले जाएं, पर प्रण नहीं जाना चाहिए। सही लक्ष्य तय करने के बाद न रुकना चाहिए और न ही झुकना चाहिए। अच्छी दिशा में अच्छे लक्ष्य के साथ अच्छे रूप में कदम बढ़ जाएं तो सफलता प्राप्त हो सकती है। कठिनाइयों से

घबराने वाले व्यक्ति के लिए कठिन कार्य करना मुश्किल हो सकता है। जिस प्रकार युद्ध करते-करते शहीद हो जाना भी हीनता की बात नहीं होती। युद्ध के मैदान से भागना शर्म की बात होती है। जीतना तो गौरव की बात है ही, शूरता से लड़ते-लड़ते मृत्यु का आलिंगन करना भी गौरवास्पद होता है। इसी प्रकार आदमी को कठिनाइयों से घबराकर हिम्मत नहीं हारनी चाहिए, सत्पुरुषार्थ नहीं छोड़ना चाहिए। वह क्या योद्धा जो समरांगण से भाग जाए, जो हिम्मत के हथियार डाल दे। जीवन में अच्छे पवित्र कार्य में, परोपकार में और सत्पुरुषार्थ में मनोबल का भाव रहना चाहिए।

पूज्यप्रवर से अहिंसा यात्रा के विषय में अवगति और प्रेरणा प्राप्त कर समुपस्थित जनता ने संकल्पत्रयी स्वीकार की।

गिरीयक के प्रमुख श्री रामशरणजी ने पूज्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया। नवादा के श्री केशरीचंद छाजेड़ ने आराध्य के अभिनंदन में अभिव्यक्ति दी। नवादा दिगम्बर जैन समाज की ओर से श्री अभय जैन ने अपने भावों को प्रस्तुति दी। श्री नवनीत छाजेड़ ने गीत का संगान किया। नवादा, कोडरमा और बिहारशरीफ के श्रद्धालुओं ने आज दिन में भी उपासना आदि का लाभ लिया। रात्रिकालीन कार्यक्रम में उपस्थित सैंकड़ों लोगों को परमाराध्य आचार्यप्रवर ने पावन संबोध प्रदान किया।

कष्ट नहीं, निर्जरा का साधन है

पूज्यप्रवर इन दिनों प्रतिदिन विहार कर रहे हैं और गर्मी क्रमशः प्रखर बनती जा रही है। आज साध्वीप्रमुखाजी ने पूज्यप्रवर से निवेदन किया--'गुरुदेव के सुबह प्रस्थान और गंतव्य तक पहुंचने में विलंब होता है। उस समय तक धूप काफी बढ़ जाती है। आचार्यप्रवर कुछ शीघ्रता करवाएं तो कुछ कष्ट टल सकता है। पूज्यप्रवर ने इस प्रसंग पर कुछ विस्तृत चर्चा की और सार स्वरूप फरमाया--'इस आतापना को कष्ट का कारण मानने की अपेक्षा निर्जरा का साधन मानना चाहिए। प्राचीन समय में तो ऋषि 'उड्ढं बाहु' (खुले बदन हाथों को ऊपर की ओर उठाकर) आतापना लेते थे। मैं वैसे आतापना नहीं लेता। सहज रूप में थोड़ी-बहुत धूप सहकर कुछ तपस्या तो हो ही सकती है। प्रासंगिक रूप में सूर्य किरणों से शरीर भी स्वस्थ रह सकता है।' आचार्यप्रवर की कष्ट सहिष्णुता और निर्जरार्थिता के सम्मुख उपस्थित लोग श्रद्धाप्रणत थे।

सद्गुण अपनाएं

१३ अप्रेल। परम पावन आचार्यप्रवर ने प्रातः गिरियक आदमपुर से पार्वतीपुर की ओर प्रस्थान किया। उदित होने के कुछ समय बाद ही सूर्य ने प्रखर रूप धारण करना शुरू कर दिया। गंतव्य की निकटता के साथ सम्मुखीन सूर्य की तेजस्विता भी क्रमशः वृद्धिंगत होती गई, किन्तु तेजः पुंज आचार्यप्रवर का समताभाव निरंतर अखंडित था। नीलगिरी के वृक्ष कहीं-कहीं छाया कर राहगीरों को राहत देने का प्रयास कर रहे थे। मार्ग के परिपार्श्वस्थ खेतों में पकी हुई गेहूं की फसल की कटाई का कार्य प्रायः संपन्नता की ओर प्रतीत हुआ। यत्र-तत्र दृष्टिगोचर हो रहे कटी हुई फसल के गट्ठर कृषकों के श्रम को बयां कर रहे थे। कुछ लोग अपने सिर पर इन भारी गट्ठरों को उठाए हुए अन्यत्र ले जाने में व्यस्त थे। आधुनिक मशीनरी के इस युग में फसल की हाथ से कटाई, उसके गट्ठर को स्वयं उठाकर अन्यत्र ले जाना, अनाज व तूड़ी को अलग-अलग करना आदि कार्य स्थानीय कृषकवर्ग के कठोर परिश्रम को दर्शा रहे थे।

पूज्यप्रवर ने विहार के दौरान नालंदा जिले की सीमा को अतिक्रान्त कर नवादा जिले में प्रवेश किया। १४.० किलोमीटर का विहार परिसम्पन्न कर पूज्यप्रवर पार्वतीपुर स्थित आदर्श मध्य विद्यालय में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

प्रवास स्थल के समीपस्थ पहाड़ पर स्थित गुफा के विषय में किंवदन्ती है कि गौतम बुद्ध ने एक वर्षावास यहां बिताया था और स्वयं इन्द्र ने उनसे प्रश्न पूछे थे। गौतमबुद्ध ने उन सभी प्रश्नों के उत्तर दिए।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत अपने पावन प्रवचन में सद्गुणों को ग्रहण करने और दुर्गुणों को छोड़ने की प्रेरणा प्रदान की।'

आचार्यप्रवर की प्रेरणा से समुपस्थित ग्रामीणों ने अहिंसा यात्रा के तीनों संकल्प स्वीकार किए। विद्यालय के पूर्व प्रधानाचार्य श्री नरेन्द्रप्रसादजी तथा श्री कृष्णमुरारी झा ने पूज्यप्रवर के स्वागत में भावाभिव्यक्ति दी।

आज दिन-रात्रि में अच्छी संख्या में ग्रामीण जनता पूज्यप्रवर के दर्शन से लाभान्वित हुई। रात्रिकालीन 'सत्संग' कार्यक्रम में भी पधारकर आचार्यप्रवर ने ग्रामीण जनता को प्रतिबोध प्रदान किया।

गुरु के प्रति हो विनयभाव

१४ अप्रेल। परमाराध्य आचार्यप्रवर प्रातः पार्वतीपुर से बरैयाबीघा कुसुम्भा के लिए प्रस्थित हुए। विहार के निर्धारित समय में कुछ समय अवशिष्ट था तो आचार्यप्रवर ने विद्यालय के मुख्य द्वार पर आसीन होकर अपना कुछ लेखन कार्य किया। निर्धारित समय पर पूज्यप्रवर ने मुख्य द्वार से गंतव्य की ओर प्रस्थान किया। मार्गवर्ती शाहपुरा मोड़ के ग्रामीण पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीष से लाभान्वित हुए। पूज्यवर का कल पार्वतीपुर में जिस विद्यालय में प्रवास हुआ था, उसके प्रधानाध्यापकजी ने शाहपुरा मोड़ स्थित अपने घर के बाहर पूज्यप्रवर के दर्शन कर मंगलपाठ का श्रवण किया। देवेनबीघा गांव के ग्रामीणों को भी पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीर्वाद प्राप्त करने का सौभाग्य मिला। एक ग्रामीण बोला--'बाबा! आप हम लोगों का भी खयाल रखें।' पूज्यप्रवर ने उसे मंगल आशीष प्रदान की। मार्ग के परिपार्श्वस्थ ईंट-भट्ठों पर कार्यरत लोगों ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए तो आचार्यप्रवर ने उन्हें भी पावन आशीर्वाद प्रदान किया। विहार के दौरान पूज्यप्रवर ने नवादा जिले की सीमा को पार कर शेखपुरा जिले की सीमा में पावन प्रवेश किया। करीब ११.५ किलोमीटर का विहार कर आचार्यप्रवर बरैयाबीघा कुसुम्भा में पधारे। उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में आज का प्रवास हुआ।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत अपने पावन प्रवचन में गुरु के महत्त्व को व्याख्यायित करते हुए उनके प्रति विनय भाव रखने की प्रेरणा प्रदान की। पूज्यप्रवर की प्रेरणा से समुपस्थित ग्रामीणों ने अहिंसा यात्रा के तीनों संकल्प ग्रहण किए। रात्रिकालीन कार्यक्रम में भी उपस्थित जनता को आचार्यप्रवर ने पावन पाथेय प्रदान किया।

भोजन में हो संयम और विवेक

१५ अप्रेल। विहार प्रारम्भ करने के समय में परिवर्तन कर आज से प्रातः छह बजे का समय निर्धारित किया गया। तदनुसार परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर बरैयाबीघा कुसुम्भा से शेखपुरा के लिए प्रस्थित हुए। विहार के दौरान कुसुम्भा और देवपुरी के सैंकड़ों ग्रामीण पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीष से लाभान्वित हुए। शेखपुरा स्थित उषा पब्लिक स्कूल और हसनगंज स्थित प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों और शिक्षकों ने भी पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीर्वाद ग्रहण किया। करीब ६.५ किलोमीटर का विहार कर आचार्यप्रवर शेखपुरा स्थित राजकीय मॉडर्न स्कूल में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में साधना के विकास के लिए भोजन संयम और भोजन विवेक की प्रेरणा प्रदान की।

पूज्यप्रवर की प्रेरणा से समुपस्थित शिक्षकों, पुलिसकर्मियों और ग्रामवासियों ने अहिंसा यात्रा की तीनों

प्रतिज्ञाएं स्वीकार कीं। विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री राकेशजी ने आचार्यप्रवर के स्वागत में अपनी अभिव्यक्ति दी।

आज दिन-रात्रि में सैंकड़ों ग्रामीणों ने पूज्यप्रवर के दर्शन का लाभ प्राप्त किया। रात्रिकालीन कार्यक्रम में भी पधारकर आचार्यप्रवर ने ग्रामीण जनता को प्रतिबोध प्रदान किया।

सुफल बनाएं मानव जीवन

१६ अप्रेल। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने प्रातः शेखपुरा से सिरारी के लिए प्रस्थान किया। शेखपुरा के सैंकड़ों ग्रामीण विहार के दौरान आचार्यप्रवर के दर्शन और मंगल आशीर्वाद से लाभान्वित हुए। मार्गस्थ राधास्वामी सत्संग व्यास के परिसर के बाहर सत्संगी लोगों ने आचार्यप्रवर के दर्शन कर मंगल आशीष प्राप्त की। पचना में बड़ी संख्या में दर्शनार्थ खड़े ग्रामीणों को पूज्यप्रवर ने पावन प्रेरणा प्रदान की तो एक मुस्लिम व्यक्ति आचार्यप्रवर से बोला--'आप हम सबको आशीर्वाद प्रदान कीजिए।' राजौरी के अशोक केवट नाम के व्यक्ति ने मार्ग में पूज्यप्रवर के दर्शन किए। वह बोला--'कल कार्यकर्ताओं ने हमें आपके बारे में जानकारी दी थी। मैं बहुत प्रभावित हुआ। मैं अपने आपको आपके दर्शन से रोक नहीं पाया। इसीलिए आज मैं आपके दर्शन करने आया हूं। बाबा! आपका आशीर्वाद लेकर मैं धन्य हो गया।'

गत कुछ दिनों से प्रखर आतप बरसाने वाला सूरज आज आकाश में विहरमाण बादलों और वातावरण में व्याप्त ठंडी हवा के कारण कुछ उपशांत बना हुआ था। करीब ११.५ किमी का विहार परिसम्पन्न कर आचार्यप्रवर सिरारी स्थित राजकीयकृत जनता उच्च विद्यालय में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम पावन आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में मानव जीवन को सुफल बनाने की प्रेरणा प्रदान की। पूज्यप्रवर से अहिंसा यात्रा की अवगति और प्रेरणा प्राप्त कर सिरारीवासियों ने प्रतिज्ञात्रयी स्वीकार की। सिरारी के मुखिया श्री विजयसिंहजी और श्री अजितसिंहजी ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपनी भावाभिव्यक्ति दी। आज दिन-रात्रि में पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ ग्रामीणों के आने का तांता लगा रहा। रात्रिकालीन कार्यक्रम में समुपस्थित सैंकड़ों ग्रामीण आचार्यप्रवर की पावन प्रेरणा से लाभान्वित हुए।

यहीं रुक जाइए न

१७ अप्रेल। परम पावन आचार्यप्रवर ने प्रातः सिरारी से परसावां की ओर प्रस्थान किया। सिसमा के सैंकड़ों ग्रामीण आचार्यप्रवर के दर्शन और मंगल आशीष से लाभान्वित हुए। इसी प्रकार कछैना, चेवारा और अउरे के ग्राम्यजनों ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया। चेवारा के ग्रामीणों के निकट पूज्यप्रवर ने अपने चरण थामे तो पचासों ग्रामीणों का झुंड आचार्यप्रवर के इर्द-गिर्द खड़ा हो गया। उनमें से एक बोला--'बाबा! आप यहीं रुक जाइए ना। यहां विद्यालय है, उसमें प्रवास कीजिए। हमारा गांव भी पिछड़ा हुआ है। आपके आने से यहां की जनता में अच्छे संस्कार आएंगे।' अन्य ग्रामीण बोला--'बाबा! आपकी यात्रा का लक्ष्य अच्छा है। हम भी इसमें सहयोग करना चाहते हैं।' आचार्यप्रवर ने ग्रामीणों से कहा--'आप अहिंसा यात्रा के तीन संकल्प लेकर हमारा सहयोग कर सकते हैं।' भीड़ में प्रसादीलाल यादव नाम का व्यक्ति कुछ आगे आया और पूज्यप्रवर की ओर दस रुपए का सिक्का आगे बढ़ाते हुए उसे देने की भावना व्यक्त की। उस व्यक्ति को साधुचर्या की अवगति दी गई। गत अनेक दिनों की भांति आज भी मार्ग के परिपार्श्व में श्वेतार्क के पौधे अच्छी संख्या में अवस्थिति लिए हुए थे। आचार्यप्रवर ने विहार के दौरान शेखपुरा जिले की सीमा को अतिक्रान्त कर लखीसराय जिले में प्रवेश किया। करीब ११.० किमी का विहार कर आचार्यप्रवर परसावां में स्थित आदर्श मध्य विद्यालय में पधारे। आज का प्रवास यही हुआ।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में नश्वर शरीर से आत्मा का उद्धार करने हेतु प्रयत्न करने की प्रेरणा दी। पूज्यप्रवर से अहिंसा यात्रा के विषय में अवगति प्राप्त कर बड़ी संख्या में समुपस्थित ग्राम्यजनों ने अहिंसा यात्रा की तीनों प्रतिज्ञाएं ग्रहण कीं। श्री नवलकिशोरजी ने पूज्यप्रवर के स्वागत में भावाभिव्यक्ति दी। रात्रिकालीन कार्यक्रम में उपस्थित सैंकड़ों ग्रामीण भी आचार्यप्रवर की पावन प्रेरणा से लाभान्वित हुए।

पूज्यप्रवर के पदार्पण से अभिभूत हुआ विद्यापीठ प्रांगण

१८ अप्रेल। परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर प्रातः परसावां से लखीसराय के लिए प्रस्थित हुए। विहार के दौरान चनागरा, डूरडी, चोहरा, बिहरोरा और लखीसराय के सैंकड़ों-सैंकड़ों लोगों ने आचार्यप्रवर के दर्शन किए तो पूज्यप्रवर ने उन्हें पावन आशीर्वाद प्रदान किया। चोहरा में शैलेन्द्र नाम के एक व्यक्ति ने इक्कीस रुपए आचार्यप्रवर की ओर आगे बढ़ाते हुए आचार्यप्रवर को भेंट करने की भावना व्यक्त की। उसे साधुचर्या की अवगति देते हुए नशा छोड़ने की प्रेरणा दी गई तो उसने नशामुक्ति की प्रतिज्ञा स्वीकार की। आज के विहार पथ के परिपार्श्वस्थ सघन वृक्ष अपनी छाया से पथिकों को सूर्य के प्रखर आतप से बचा रहे थे। १४.० किमी का विहार कर आचार्यप्रवर लखीसराय स्थित बालिका विद्यापीठ परिसर में स्थित गीता भवन में पधारे। विद्यापीठ के प्रधानाध्यापक श्री शैलेन्द्र कुमार सिंह आदि शिक्षकों तथा कतारबद्ध और करबद्ध खड़े विद्यार्थियों ने आचार्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया। आचार्यप्रवर का आज का प्रवास यहीं हुआ।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में समुपस्थित सैंकड़ों विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'हमारे जीवन में भाषा का महत्त्वपूर्ण स्थान है। भाषा के द्वारा एक-दूसरे से संवाद भी किया जा सकता है, विचरों का आदान-प्रदान किया जा सकता है। उसके बिना विचारों के आदान-प्रदान में कठिनाई हो सकती है। इस प्रकार भाषा विचार विनिमय का एक सशक्त साधन है। भाषा लिखित भी हो सकती है और मौखिक भी हो सकती है। दोनों का अपना-अपना महत्त्व है। भाषा के दोष और गुण दोनों होते हैं। अनावश्यक बोलना वाणी का दोष है। अनावश्यक ज्यादा बोलने से आदमी लाघव को प्राप्त हो सकता है। मितभाषी व्यक्ति उन्नति कर सकता है। मौन एक अच्छा प्रयोग है, उससे अनेक लाभ भी हो सकते हैं। वाचाल व्यक्ति का विकास अवरुद्ध हो सकता है। आदमी को परिमितभाषी बनने का प्रयत्न करना चाहिए।

झूठ, कटु और निरर्थक बोलना भाषा का दोष है। सत्य, मधुर और सारपूर्ण बोलना भाषा का गुण होता है। मितभाषिता, सत्यभाषिता और मधुरभाषिता को आत्मसात् करने वाला व्यक्ति वाग्मी बन सकता है।'

पूज्यप्रवर ने अपने प्रवचन के मध्य विद्यार्थियों को सत्यनिष्ठा की प्रेरणा देते हुए एक कहानी सुनाई। उस कहानी के दौरान आचार्यप्रवर ने विद्यार्थियों से एक प्रश्न पूछा। एक विद्यार्थी ने उत्तर दिया, किन्तु वह उत्तर सही नहीं था। आचार्यप्रवर ने अन्य विद्यार्थियों से पूछा तो कुछ विद्यार्थियों ने अपने हाथ उठाकर उत्तर देने की भावना व्यक्त की। आचार्यप्रवर के निर्देश पर बालिका आयुषी प्रसाद ने उसका सही उत्तर दिया। इस प्रकार आचार्यप्रवर और विद्यार्थियों के बीच संवाद की स्थिति बन गई। आचार्यप्रवर ने जब अहिंसा यात्रा की प्रतिज्ञाओं को स्वीकार करने का आह्वान किया तो उपस्थित सैंकड़ों विद्यार्थी सोत्साह समुद्यत हो गए। पूज्यप्रवर ने शिक्षकों के साथ विद्यार्थियों को संकल्पत्रयी ग्रहण करवाई।

विद्यापीठ के प्रिंसिपल श्री शैलेन्द्रकुमार सिंह ने पूज्यप्रवर के स्वागत में कहा--'इस गौरवशाली भूमि पर गुरुवर के मंगल चरण सहज ही पड़े, हम बहुत ही आह्लादित हैं। अपनी मधुर वाणी से हमें और हमारे बच्चों को आपने जो बताया, वह बहुत ही हृदयस्पर्शी था। आपके पावन मुख से प्रेरणा प्राप्त कर हम ऊर्जावान हुए।

हम आपका हमारे इस प्रांगण में दिल की गहराइयों से अभिनन्दन करते हैं। आपके आशीर्वाद से हमारे बच्चे विकास करते हुए प्रज्ञावान बनेंगे।'

विद्यापीठ के वाइस प्रिंसिपल श्री एन.के. प्रसाद ने कहा--'पूरे विद्यापीठ परिवार की ओर से आचार्यश्री का कोटि-कोटि अभिनंदन करता हूं। आज बहुत ही खुशी का अवसर है कि ऐसे महापुरुष हमारे बीच आए हैं। आचार्यश्री की प्रेरणा से बच्चों के चरित्र निर्माण का पथ प्रशस्त हुआ है।'

आचार्यप्रवर आज सूर्यास्त के आसपास विद्यापीठ परिसर में स्थित विद्या भवन में पधारे। रात्रिकालीन प्रवास वहीं हुआ।

आज मध्याह्न में विद्यापीठ की कुछ शिक्षिकाएं आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में उपस्थित हुईं। पूज्यप्रवर ने उन्हें पावन पथदर्शन प्रदान किया। उसके बाद भी शिक्षिकाएं वहीं रुकी रहीं तो आचार्यप्रवर ने उनसे पूछा--'आप लोग कुछ कहना चाहती हैं क्या?' शिक्षिका अभिलाषा सिंह ने कहा--'गुरुजी! मन स्थिर नहीं रहता। बच्चों पर और परिवार में खूब मेहनत करते हैं, पर सफलता नहीं मिलती। आचार्यप्रवर ने उस शिक्षिका को मनोबल रखने की प्रेरणा प्रदान की तो उसकी आंखों से अश्रुधारा बहने लगी और बोली--'गुरुजी, मनोबल है, तभी तो कार्य चल रहा है। आचार्यप्रवर ने उसे मंगलपाठ सुनाते हुए ध्यान करने की प्रेरणा दी तो वह बोली--'आचार्यश्री! मुझे लगता है आपके दर्शन से मेरे सारे कष्ट दूर हो जाएंगे।'

नशामुक्ति का संकल्प लेकर लिया ऑटोग्राफ

१६ अप्रेल। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर लखीसराय से अलीनगर की ओर प्रस्थित हुए। गढ़ी विशनपुर, रामपुर, मानोरामपुर, नवाबगंज, चन्दनपुर और खर्रा में सैंकड़ों-सैंकड़ों ग्रामीण आचार्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीष से लाभान्वित हुए। योगाभ्यास कर रहे रामपुर आदर्श विद्या भारती स्कूल के विद्यार्थियों ने करबद्ध होकर 'वन्दे गुरुवरम्' का उच्चारण कर आचार्यप्रवर का अभिवादन किया तो आचार्यप्रवर ने उन्हें मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। रामपुर के विद्यार्थियों ने आचार्यप्रवर के ऑटोग्राफ की मांग की तो उन्हें समझाया गया कि नशामुक्ति का संकल्प आचार्यश्री के ऑटोग्राफ की तरह है, जो जिन्दगीभर आपके साथ रह सकता है। सभी विद्यार्थियों ने नशामुक्ति का संकल्प स्वीकार कर मानों आचार्यप्रवर का ऑटोग्राफ प्राप्त कर लिया। इस क्षेत्र में प्रायः हर घर के बाहर खच्चर अथवा घोड़े जाति के पशु देखे जा सकते हैं। विहार के दौरान लोग यत्र-तत्र इन पशुओं की सवारी करते हुए अथवा उन पर माल लादकर अन्यत्र ले जाते हुए दृष्टिगोचर हो रहे थे। करीब ८.५ किमी का विहार कर आचार्यप्रवर अलीनगर स्थित जनता उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में पधारे। आज का प्रवास यही हुआ।

परम पावन आचार्यप्रवर ने मुख्य कार्यक्रम के अंतर्गत अपने मंगल प्रवचन में कहा--'मनुष्य जीवन दुर्लभ है। जिसे यह जीवन प्राप्त है, उसे उसका अच्छा लाभ उठाने का प्रयत्न करना चाहिए। मनुष्य जन्म रूपी वृक्ष के छह फल बताए गए--जिनेन्द्रपूजा, गुरु उपासना, सत्त्वानुकंपा, सुपात्रदान, गुणानुराग और आगम श्रवण। ये छह फल जब मानव जीवन रूपी वृक्ष के लगते हैं तो यह जीवन सफल, सुफल बन जाता है। इससे यह जीवन सुखी बन सकता है और आगे भी सद्गति मिलने की संभावना बन जाती है।'

आचार्यप्रवर से अहिंसा यात्रा के विषय में अवगति और प्रेरणा प्राप्त कर उपस्थित ग्रामीणों और शिक्षकों ने अहिंसा यात्रा की तीनों प्रतिज्ञाएं स्वीकार कीं। अलीनगर के सरपंचपति तथा भाजपा के जिला महामंत्री श्री अंगदकुमारसिंह, पंचायत सचिव श्री मनोजकुमारसिंह तथा विद्यालय के शिक्षक श्री आशुतोष मिश्रा ने पूज्यप्रवर के स्वागत में श्रद्धासिक्त अभिव्यक्ति दी।

रात्रिकालीन कार्यक्रम में बड़ी संख्या में उपस्थित ग्रामीणों को आचार्यप्रवर ने पावन पाथेय प्रदान किया।

प्रलम्ब विहार से पहले अचानक बदला मौसम

२० अप्रेल। पूर्व निर्धारित कार्यक्रमानुसार आज का विहार कुछ लम्बा था तथा आचार्यप्रवर ने आज के निर्धारित गन्तव्य से करीब पौने दो किमी पूर्व स्थित साध्वीवृंद के प्रवास स्थल में प्रातराश करने की भी स्वीकृति प्रदान कर रखी थी, ऐसे में गंतव्य तक पहुंचते-पहुंचते सूर्य के तीव्र आतप की संभावना की जा रही थी। सूर्योदय के कुछ समय पूर्व मौसम ने अचानक करवट ली और तीव्र अंधड़ पूरे वातावरण में छा गया। कुछ क्षण तक रहे इस अंधड़ के बाद मौसम पूरी तरह बदल गया। आकाश मेघाच्छादित हो गया। हवा अब भी वेग के साथ बह रही थी, किन्तु उसके साथ अब न रेतीले कण थे और न ही गर्माहट। शीतलता की चादर ओढ़े इस हवा से मौसम सुहावना बन गया। अतिशयधर आचार्यप्रवर ने निर्धारित समय पर अलीनगर से प्रस्थान किया। सामने से वेग के साथ बहती हुई हवा चलने में कुछ कठिनाई अवश्य उत्पन्न कर रही थी, किन्तु उससे व्याप्त ठंड से होने वाली सुविधा के सामने वह कठिनाई नगण्य-सी थी।

अलीनगर में यत्र-तत्र समूह रूप में खड़े ग्रामीण दर्शनार्थियों पर आचार्यप्रवर ने आशीष वृष्टि की। आज के विहार पथ के आसपास ईंट-भट्ठे बहुलता लिए हुए थे। बारिश की संभावना के मद्देनजर वहां कार्यरत लोग नवनिर्मित ईंटों की सुरक्षा की व्यवस्था करते हुए दिखाई दे रहे थे। खेमतरणी के ग्रामीणों और सूर्यगढ़ माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों ने पूज्यप्रवर को वंदन कर मंगल आशीष प्राप्त की। पूज्यप्रवर एक स्थान पर 'उदकपान' के लिए आसीन हुए ही थे कि हल्की बूंदाबांदी प्रारंभ हो गई। आचार्यप्रवर ने बिना 'उदकपान' किए वहां से प्रस्थान कर दिया और कल्प व्यवस्थानुसार मार्गस्थ श्री सुमनकुमार राय के जनरल स्टोर में पधारकर 'उदकपान' किया। सुमनजी को शराबमुक्ति की प्रेरणा दी गई तो उन्होंने शराब छोड़ने की प्रतिज्ञा स्वीकार कर ली। माणिकपुर, अवगील, हुसैना और पहाड़पुर में सैंकड़ों ग्रामीणों ने आचार्यप्रवर के दर्शन किए, किन्तु वर्षा के कारण वे आचार्यप्रवर का आशीर्वाद प्राप्त नहीं कर पाए। यदा-कदा हो रही मंद मेघगर्जना तेज वर्षा की संभावना लिए हुए थी, किन्तु कुछ समय पश्चात् वर्षा थम गई।

आचार्यप्रवर ऋषि पहाड़पुर स्थित साध्वीवृंद के आज के प्रवास स्थल मध्य विद्यालय में पधारे। आज का प्रातराश वहीं हुआ। करीब एक घंटा प्रवास के उपरान्त आचार्यप्रवर ने वहां से प्रस्थान किया। मार्ग में हैवतगंज, किरणपुर और झापानी के ग्रामीण आचार्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीष से लाभान्वित हुए। आचार्यप्रवर कुल १५.५ किमी का विहार कर झापानी पधारे। रामजानकी उच्च विद्यालय में आज का प्रवास हुआ।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में सम्यक् दर्शन को परिपुष्ट बनाने की प्रेरणा प्रदान की।

समुपस्थित ग्रामीणों ने आचार्यप्रवर से अहिंसायात्रा की तीनों प्रतिज्ञाएं स्वीकार कीं। रात्रिकालीन कार्यक्रम में उपस्थित सैंकड़ों ग्रामवासियों को परमाराध्य आचार्यप्रवर ने पावन प्रेरणा प्रदान की।

तुलसी संगत साधु की हरे कोटि अपराध

२१ अप्रेल। परमाराध्य आचार्यप्रवर प्रातः झापानी से सिंघिया की ओर प्रस्थित हुए। विहार के दौरान झापानी, खाता, मेदिनी चौक, बंशीपुर, अमरपुर भिडहा, भेरहा ताजपुर, सलारपुर, सुन्दरपुर, चांद टोला हेमजापुर और धरहरा में ग्रामीण समूहों ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए। आचार्यप्रवर ने यत्र-तत्र रुक-रुककर उन पर आशीषवृष्टि की। इस प्रकार गंगा नदी के तट पर बसे इस क्षेत्र में लोगों का भक्तिभाव आचार्यप्रवर की गति को बाधित कर रहा था। खाता में एक वयोवृद्ध व्यक्ति मंद-मंद गति से चलता हुआ आचार्यप्रवर के पास पहुंचा और वंदन कर बोला--'बाबा! मेरा बेटा हरा (खो) गया। आप आशीर्वाद दो कि वह पुनः मिल जाए।'

आचार्यप्रवर ने ध्यानपूर्वक उस वृद्ध की पीड़ा को सुना और उसे एक मंत्र प्रदान किया। मेदिनी चौक में 'ट्यूशन' में अध्ययनरत विद्यार्थियों ने आचार्यप्रवर को देखा तो उठकर आचार्यप्रवर को करबद्ध वंदन किया। आचार्यप्रवर ने अपने चरण थामकर उन्हें मंगल प्रेरणा प्रदान की। बंशीपुर स्थित 'हॉली फेथ एकेडमी पब्लिक स्कूल' के विद्यार्थियों को भी आचार्यप्रवर के दर्शन और पावन संबोध को प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। अमरपुर भिडहा का सुरेश शाह नामक एक व्यक्ति पीछे भागते हुए आचार्यप्रवर के सम्मुख पहुंचा और दस रुपए का नोट पूज्यप्रवर के आगे बढ़ाया। आचार्यप्रवर ने उसे समझाया--'हम जैन साधु हैं, रुपया नहीं लेते।' पूज्यप्रवर ने उन्हें संक्षिप्त प्रेरणा भी प्रदान की। सलारपुर स्थित उत्क्रमित विद्यालय के विद्यार्थी भी आचार्यप्रवर के दर्शन और पावन प्रेरणा से लाभान्वित हुए। सुन्दरपुर के तिरानवे वर्षीय वयोवृद्ध व्यक्ति श्री रघुनंदनदास ने आचार्यप्रवर के दर्शन किए तो पूज्यप्रवर ने उनके निकट अपने चरण थाम लिए। आचार्यप्रवर को जब यह ज्ञात हुआ कि रघुनंदनजी कबीरपंथी हैं तो आचार्यप्रवर ने उन्हें 'तिरेगा वही जाकै हिरदै में हर है' गीत की कुछ पंक्तियां सुनाईं। रघुनंदनजी ने भी एक पद्य बोला--

आए एक ही देश से, उतरे एक ही घाट।
हवा लगी संसार की, हो गए बारह बांट।।

आचार्यप्रवर ने एक और पद्य फरमाया--

एक घड़ी आधी घड़ी, आधी में पुनि आध।
तुलसी संगत साधु की, हरे कोटि अपराध।।

यह सुनकर रघुनंदनजी बोले--'संगत से अपराध कैसे कटेंगे।' आचार्यप्रवर ने फरमाया--'साधु की संगत में आकर कोई अच्छी बात को ग्रहण करेगा और बुराई को छोड़ेगा तो उसके अपराध कम हो सकेंगे।' रघुनंदनजी बोले--'हां, ये बिलकुल ठीक बात है।'

आज के पूरे विहार के दौरान आकाश में हल्के बादल छाए रहे। इस कारण हवा में शीतलता व्याप्त रही और मौसम सुहावना बना रहा। आचार्यप्रवर मार्ग में लखीसराय जिले की सीमा को पार कर मुंगेर जिले में प्रविष्ट हुए। ११.६ किमी का विहार कर आचार्यप्रवर सिंघिया स्थित श्री प्रयाण नारायण मध्य विद्यालय में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने मंगल प्रवचन में दयाभाव को आत्मसात् करने की प्रेरणा प्रदान की।

पूज्यप्रवर की प्रेरणा से समुपस्थित ग्रामवासियों ने अहिंसा यात्रा के तीनों संकल्प ग्रहण किए। विद्यालय के प्रधानाध्यापक श्री सुदामासिंह ने आचार्यप्रवर के स्वागत में अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति दी। रात्रिकालीन कार्यक्रम में उपस्थित सैंकड़ों ग्रामीणों को पूज्यप्रवर से पावन पाथेय प्राप्त हुआ।

योग नगरी मुंगेर में योगीराज

२२ अप्रेल। वैशाख कृष्णा एकादशी। तेरापंथ धर्मसंघ के दशमाधिशास्ता आचार्य महाप्रज्ञजी की सातवीं वार्षिक पुण्यतिथि। परमाराध्य आचार्यश्री महाश्रमणजी ने प्रातः सिंघिया से मुंगेर की ओर प्रस्थान किया। गंगा नदी के तट के समीपस्थ आज के विहार पथ में अवस्थित सिंघिया, फरदा, परहन और मुंगेर के सैंकड़ों लोग अपने घरों और व्यवसायिक प्रतिष्ठानों के बाहर पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीष से लाभान्वित हुए। इस क्षेत्र में ईंट-भट्ठे प्रचुरता लिए हुए दृष्टिगोचर हुए। ईंटों के निर्माण के लिए गंगा नदी की मिट्टी खोदने का कार्य भी जारी था। विद्याभारती के अंतर्गत संचालित सरस्वती शिशु मंदिर के विद्यार्थियों ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीष प्राप्त की। आचार्यप्रवर के निर्देशानुसार मुख्यमुनिश्री ने विद्यार्थियों को प्रेरणा दी।

विद्यालय के प्रिंसिपल श्री धर्मेन्द्रकुमार ने पूज्यचरणों में अपने मंगलभाव अर्पित किए। आचार्यप्रवर करीब १२.२ किमी का विहार कर मुंगेर पधारे और आज के प्रवास स्थल के सामने से होते हुए प्रवास स्थल से करीब ६०० मीटर दूर स्थित 'बिहार स्कूल ऑफ योगा' परिसर में पधारे।

इस योग आश्रम से संबंधित अनेक संन्यासियों ने आचार्यप्रवर की भावभीनी अगवानी की। आचार्यप्रवर आश्रम के प्रमुख संन्यासी स्वामी निरंजनानंदजी के निवास स्थल की ओर पधारे। अपने निवास परिसर में स्वामी निरंजनानंदजी ने आचार्यप्रवर की भावभीनी अगवानी करते हुए कहा--'आपके पधारने से हमारा आश्रम धन्य हो गया।' पूज्यप्रवर निर्धारित वार्तालाप स्थल पर पधारे। वहां दो पट्ट लगे हुए थे। स्वामी निरंजनानंदजी के अनुरोध पर आचार्यप्रवर एक पट्ट पर आसीन हुए। स्वामी निरंजनानंदजी पूज्यप्रवर के सम्मुख नीचे जमीन पर ही वज्रासन में बैठ गए। दोनों विभूतियों के बीच कुछ क्षण वार्तालाप का क्रम रहा। तदुपरान्त आचार्यप्रवर इस परिसर में एक ओर निर्मित कक्षों की ओर पधारे और एक कक्ष में आसीन होकर प्रातराश किया। प्रातराश के उपरान्त उसी वार्तालाप स्थल पर परम पूज्य आचार्यप्रवर और स्वामी निरंजनानंदजी के बीच लंबा वार्तालाप हुआ। तदुपरान्त आचार्यप्रवर ने परिसर का कुछ अवलोकन भी किया। स्वामी निरंजनानंदजी साधना की दृष्टि से अपनी निर्धारित क्षेत्र सीमा तक आचार्यप्रवर को पहुंचाने साथ चले। पूज्यप्रवर और स्वामी निरंजनानंदजी के बीच हुए वार्तालाप के अंश पढ़ें आगामी विज्ञप्ति में। पूज्यप्रवर वहां से प्रस्थान कर मुंगेर इन्डोर स्टेडियम में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

जैन योग के पुनरुद्धारक आचार्य महाप्रज्ञजी का महाप्रयाण दिवस

आज का मुख्य प्रवचन कार्यक्रम आचार्य महाप्रज्ञ महाप्रयाण दिवस के संदर्भ में समायोजित हुआ। कार्यक्रम में महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने वक्तव्य में कहा--'परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर अहिंसा यात्रा करते हुए योग नगरी मुंगेर में पधारे हैं और संयोग की बात है कि आज जैन योग के पुनरुद्धारक आचार्य महाप्रज्ञजी का महाप्रयाण दिवस है। जैन परंपरा में अनेकानेक आचार्यों ने योग की साधना की और उस विषय में ग्रंथ लिखे, किन्तु एक समय ऐसा आया जब जैन परंपरा में ध्यान, योग के प्रयोग मंथर गति से चलने लगे अथवा अवरुद्ध हो गए। उस समय गुरुदेव तुलसी के निर्देशन में आचार्य महाप्रज्ञजी ने जैन आगमों का मंथन कर उनमें से प्राप्त स्रोतों के आधार पर साधना की, प्रयोग किए और ध्यान की विस्मृत परंपरा को पुनर्जीवित किया। संभवतः इसी आधार पर गुरुदेव तुलसी ने आचार्य महाप्रज्ञजी के लिए 'जैन योग पुनरुद्धारक' विशेषण का प्रयोग किया। आचार्य महाप्रज्ञजी का जीवन मानव से महामानव बनने की दिलचस्प कहानी है। वे अपने जीवन के प्रारंभिक वर्षों में साधारण बालक थे, किन्तु धीरे-धीरे उनकी प्रज्ञा में निखार आता गया। विनय और विवेक के वे जीवंत प्रतीक थे। उनकी श्रद्धा जितनी प्रखर थी, तर्क शक्ति भी उतनी ही प्रखर थी। वे ग्रंथों से घिरे हुए निर्ग्रन्थ थे। उनके जीवन में प्रज्ञा और पुरुषार्थ की समन्विति थी। उनमें गुरु की आज्ञा के प्रति और अपने आचार के प्रति जो जागरूकता थी, वह हमारे लिए प्रेरणा है। गुरुदेव तुलसी के साथ उनका तादात्मय भाव विलक्षण था। गुरु-शिष्य का ऐसा योग विरल होता है। उन्होंने अपनी प्रज्ञा के बल पर विद्वज्जगत को प्रभावित किया और साहित्य की जो अजस्र धारा बहाई, वह हमारे लिए अमूल्य धरोहर है। उन्होंने अपने अनुभवों और अपनी प्रज्ञा को आचार्यश्री महाश्रमणजी में संप्रेषित किया। आज हम आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ के रूप में आचार्यश्री महाश्रमणजी को देख रहे हैं। हम आपके नेतृत्व में साधना कर रहे हैं। आज इस अवसर पर आचार्य महाप्रज्ञजी की पावन स्मृति करते हुए यह मंगलकामना करती हूं कि आचार्यश्री महाश्रमणजी ने गुरुद्वय से जो कुछ पाया है, उन गुणों की श्रीवृद्धि करते हुए हमें दीर्घकाल तक अपना नेतृत्व देते रहें।'

मुख्यमुनिश्री ने अपने अभिभाषण में कहा--'आज परम पूज्य गुरुदेव की सप्तम वार्षिकी तिथि है। वे मेरे संयम प्रदाता थे, महान उपकारी थे। ऐसा कहा जा सकता है कि उनकी मुझ पर अहेतुकी कृपा थी। मुझे उनकी निकटता से सेवा का अवसर भी प्राप्त हुआ। वे एक प्रज्ञापुरुष आचार्य थे। उनका उपशम भाव भी प्रकृष्ट था। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के महाप्रयाण के बाद आज के दिन युवाचार्यश्री महाश्रमणजी नैसर्गिक रूप में आचार्य बन गए थे। मैं आज यही मंगलकामना करता हूं कि तेरापंथ धर्मसंघ आपके पावन नेतृत्व में विकास की ऊंचाइयों को छूता रहे।'

मुख्यनियोजिकाजी ने अपने वक्तव्य में कहा--'परम पूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी ने तीनों काल का मूल्यांकन किया। यही कारण था कि प्रबुद्ध लोग उनके प्रति विशेष आकर्षित थे। उनके प्रत्येक कार्य में प्रबुद्धता के साथ संतता भी मुख्य रूप से झलकती थी। उनका साहित्य प्रबुद्ध लोगों के लिए खुराक है तो जन सामान्य के लिए भी वह रुचिकर बना हुआ है। राजनीति, धर्मनीति, समाजनीति आदि किसी भी वर्ग से जुड़ा हुआ व्यक्ति उनके सान्निध्य में आ जाता तो उनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रहता। उनके उत्तराधिकारी आचार्यश्री महाश्रमणजी में भी संतता और प्रबुद्धता के दर्शन होते हैं। मैं यही मंगलकामना करती हूं कि आपके सान्निध्य में हम सबकी संतता और प्रबुद्धता प्रवर्धमान होती रहे।'

साध्वीवर्याजी ने कहा--'परम श्रद्धेय आचार्य महाप्रज्ञजी के व्यक्तित्व की विशेषताओं को मापना असंभव है। उन्होंने पूरी दुनिया पर उपकार करते हुए प्रेक्षाध्यान, जीवन-विज्ञान, आगम संपादन जैसे महान अवदान दिए। वे मेरे मार्गप्रदाता थे। गृहस्थावस्था और समण श्रेणी में मुझे उनका सान्निध्य प्राप्त हुआ। उन्होंने मुझे समता और प्रज्ञा के विकास की प्रेरणा प्रदान की थी। मैं आचार्यश्री महाश्रमणजी के पावन सान्निध्य में इन दोनों का विकास करती रहूं।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'महाप्रज्ञ' एक गरिमापूर्ण शब्द है। जिसमें विशिष्ट-महती प्रज्ञा होती है, वह वस्तुतः 'महाप्रज्ञ' कहलाने का अधिकारी होता है। आज जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के दशमाधिशास्ता परम पूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञजी का महाप्रयाण दिवस है। आज से सात वर्ष पूर्व अपराह्न में सरदारशहर स्थित गोठीजी की हवेली में उन्होंने इस नश्वर देह से विदाई ली थी। उस प्रसंग को आज सात वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। परम पूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञजी का जीवन उपलब्धियों से युक्त था। उन्होंने आगम वाङ्मय के संपादन का अति महत्त्वपूर्ण कार्य किया। हालांकि वह कार्य अब तक पूर्णतया संपन्न नहीं हुआ है। प्रेक्षाध्यान और जीवन-विज्ञान--ये दोनों अवदान उनसे जुड़े हुए हैं। अनेकानेक व्यक्तियों को उन्होंने मुनि दीक्षा प्रदान की। आगम संपादन के सिवाय भी उनका अन्य साहित्य अच्छी मात्रा में है। उनकी भाषा भी अच्छी थी, शुद्ध थी और कुछ संस्कृत से प्रभावित प्रतीत हुई। संस्कृत भाषा का भी उनका अच्छा अध्ययन था। इस प्रकार उनका जीवन अनेक वैशिष्ट्यों से भरा था। लगभग ९० वर्षों का उनका जीवनकाल रहा। हममें से कितने-कितने व्यक्तियों को उनके साथ/उनके आसपास रहने का मौका मिला। (पूज्यप्रवर ने आज के प्रसंग में स्वरचित गीत का संगान किया। पूज्यप्रवर द्वारा समुच्चारित गीत इसी विज्ञप्ति के मुख पृष्ठ पर प्रकाशित है।)

परम पूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी में श्रुत का विकास था। श्रुत के विकास के लिए स्वाध्यायशीलता रहनी चाहिए। आगम आदि के अध्ययन के द्वारा श्रुतधर बना जा सकता है। आचार्य महाप्रज्ञजी 'जैन योग पुनरुद्धारक' थे। मुझे स्मरण है कि जैन विश्वभारती लाडनूं स्थित सुधर्मा सभा में गुरुदेव तुलसी ने युवाचार्य महाप्रज्ञजी को 'जैन योग पुनरुद्धारक' कहा था। चित्त शुद्धि की दृष्टि से किया जाने वाला प्रेक्षाध्यान अध्यात्म की दिशा में आगे बढ़ाने वाला उपक्रम है। जीवन-विज्ञान विद्यार्थियों और शिक्षकों में अच्छे संस्कारों के निर्माण की प्रेरणा देने वाला, उसकी दिशा बताने और सामग्री देने वाला उपक्रम है। आचार्य महाप्रज्ञजी वत्सलता की मानों वर्षा करते थे। उनमें करुणा भी थी, प्रज्ञा का स्पंदन था, प्रतिभा थी।

मुझे परम पूज्य गुरुदेव तुलसी और परम पूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के बीच सेतु बनने का अवसर प्राप्त हुआ। दोनों गुरुओं के संदेश को परस्पर पहुंचाने का यत्किंचित कार्य मेरे द्वारा होता था। मैं प्रायः रात्रि में गुरुदेव तुलसी के पास सोया करता था और दिन में कार्यवश महाप्रज्ञजीप्रवर के पास रहता था। गुरुद्वय की छत्रछाया मुझ पर रही थी। आचार्य महाप्रज्ञजी के पास मैं युवाचार्य के रूप में करीब तेरह वर्षों तक तथा महाश्रमण के रूप में लगभग आठ वर्षों तक रहा। पहले मैं युवाचार्यश्री के संदर्भ में 'महाश्रमण' था, फिर गुरुदेव तुलसी ने आचार्य महाप्रज्ञजी के सहयोगी के रूप में मुझे पुनः 'महाश्रमण' बनाया था। लगभग चार वर्षों तक युवाचार्य महाप्रज्ञजी के अंतरंग कार्यों में सचिव/सहयोगी के रूप में भी रहा। इस प्रकार औपचारिक नियुक्ति के साथ करीब पच्चीस वर्षों तक आचार्य महाप्रज्ञजी के साथ मेरा प्रबंधन संबंधी जुड़ाव भी रहा। आगम कार्य के संदर्भ में भी मुझे उनके चरणोपपात में बैठने का अवसर प्राप्त हुआ। एक विद्यार्थी के रूप में मैंने उनके पास अनेक ग्रंथों का अध्ययन भी किया था। युवाचार्य के रूप में कितनी-कितनी बार उनके उपपात में बैठने और संघीय एकान्त वार्ता का अवसर भी मुझे मिला। हमारी कई बातें गहरी भी होतीं। मैं उनसे बहुत छोटा था। उम्र में करीब ४२ वर्षों का फासला था। उन्होंने मुझे ऊंचा स्थान दिया, मान दिया और ज्ञान का दान भी दिया। आज वे सब बातें स्मृति का विषय बन गई हैं।

आज परम पूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञजी के महाप्रयाण को सात वर्ष परिसम्पन्न हो रहे हैं। सप्तम वार्षिकी तिथि के अवसर पर मैं परम पूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी के प्रति श्रद्धाभाव अर्पित करता हूं और मंगलकामना करता हूं कि यथोचित रूप में उनका साया, उनका वरदहस्त हमें मिलता रहे।

आज मैं मुंगेर के योग से संबंधित स्थान में गया। परम पूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी का संभवतः वहां कभी पदार्पण नहीं हुआ होगा, किन्तु वैचारिक साधनात्मक संपर्क वहां से रहा, ऐसा प्रतीत हुआ। योग साधना से संबंधित क्षेत्र में आकर मैं परम पूज्य गुरुदेव के प्रति श्रद्धा अर्पित करता हूं।'

कार्यक्रम में साध्वीवृंद, समणीवृंद और मुनि अनेकांतकुमारजी ने पृथक-पृथक गीतों का संगान कर दशमाधिशास्ता आचार्यप्रवर के प्रति अपनी भावांजलि अर्पित की। मुनि कोमलकुमारजी और मुनि मननकुमारजी ने अपने भावों को प्रस्तुति दी। भागलपुर तेरापंथ महिला मंडल ने गीत का संगान किया। श्री नवलकिशोरसिंह, मुंगेर भाजपा के वरिष्ठ नेता श्री राजेश जैन ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

महत्त्वपूर्ण है विनय

२३ अप्रेल। परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर प्रातः मुंगेर से नौवागढ़ी के लिए प्रस्थित हुए। मुंगेर के सैंकड़ों नागरिकों ने पूज्य चरणों में अपनी प्रणति अर्पित की तो आचार्यप्रवर ने भी उन पर आशीषवृष्टि की। विहार के दौरान बांक और नौवागढ़ी के ग्राम्यजनों को भी आचार्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीष प्राप्त करने का सौभाग्य मिला। जानकीनगर मध्य विद्यालय के विद्यार्थी अणुव्रत शिक्षक संसद से जुड़े हुए नौवागढ़ी के कार्यकर्ता श्री सुरेश मालाकार के साथ आचार्यप्रवर के दर्शनार्थ उपस्थित हुए। आचार्यप्रवर ने उन्हें मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। ९.५ किमी का विहार कर आचार्यप्रवर नौवागढ़ी स्थित आदर्श मध्य विद्यालय में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

शिवमंदिर प्रांगण में समायोजित मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'धर्म रूपी वृक्ष का मूल है--विनय। धर्म की निष्पत्ति मोक्ष होता है। विनय से श्लाघा भी प्राप्त हो सकती है। उससे ज्ञान भी प्राप्त हो सकता है। आदमी को यह ध्यान देना चाहिए कि उसके अंतःकरण और व्यवहार में विनय है या नहीं? जिंदगी में अभिमान में नहीं जाना चाहिए। जो पूर्ण नहीं होता है, वही

अभिमान कर सकता है। अभिमान से गुस्सा भी उत्पन्न हो सकता है। क्रोध को छोड़ने के लिए अभिमान को छोड़ना जरूरी है। अहंकार ज्ञान प्राप्ति में बाधक होता है। जीवन में विनय बहुत महत्त्वपूर्ण होता है। आदमी को उसके विकास का प्रयत्न करना चाहिए।'

आचार्यप्रवर की प्रेरणा से समुपस्थित ग्रामवासी अहिंसा यात्रा के तीनों संकल्पों से कृतसंकल्प बने। कार्यक्रम के उपरान्त भी पूज्यप्रवर के निर्देशानुसार जानकीनगर मध्य विद्यालय के विद्यार्थियों को कुछ और प्रेरणा दी गई। आज दिन-रात्रि में सैंकड़ों-सैंकड़ों ग्रामीण आचार्यप्रवर के दर्शन और यथावसर पावन आशीष से लाभान्वित हुए। मध्य रात्रि में कुछ तेज तूफान के साथ हल्की वर्षा भी हुई। जिससे वातावरण में शीतलता व्याप गई।

विद्वज्जनों की जिज्ञासाएं और विद्वच्छिरोमणि के समाधान

परमाराध्य आचार्यप्रवर १० अप्रेल को नवनालन्दा महाविहार समविश्वविद्यालय में पधारे। वहां समायोजित मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में पूज्यप्रवर के प्रवचन के उपरान्त जिज्ञासा-समाधान का क्रम चला। इस क्रम के अंतर्गत परमाराध्य आचार्यप्रवर ने विश्वविद्यालयों से संबंधित वरिष्ठ व्यक्तियों की जिज्ञासाओं के समाधान प्रदान किए। जिज्ञासुओं की जिज्ञासाएं तो और भी थीं, किन्तु समयाभाव के कारण इस क्रम को विराम देना पड़ा। यहां प्रस्तुत है जिज्ञासाएं और पूज्यप्रवर द्वारा प्रदत्त समाधान।

श्री सुनील प्रसाद सिन्हा (रजिस्ट्रार, नवनालन्दा महाविहार समविश्वविद्यालय)-ऐसे महापुरुष से प्रश्न नहीं किए जाते, आशीष लिए जाते हैं। मैं अपने आपको बड़ा असहज महसूस कर रहा हूं, जब मुझे इस मुकाम पर लाकर खड़ा कर दिया गया है, लेकिन जिज्ञासा का समाधान लेने का इससे अच्छा कोई अवसर हो भी नहीं सकता। इससे अच्छी जगह और इससे अच्छा कोई सुअवसर नहीं मिलेगा। मुझे पहले से पता होता तो मैं पहले से बहुत-सी जिज्ञासाओं को इकट्ठा कर लाता। आचार्यश्री ने अभी कहा कि हम अपने आपको पुराने दौर में रख रहे हैं। इस भाग-दौड़ के समय में भी पैदल चल रहे हैं। हम अहिंसा के मार्ग पर बढ़ रहे हैं। मेरा सवाल है कि आचार्यश्री हमें वह रास्ता बताएं जिसमें हम अपने आपको आज के दौर में रखकर खुद को निर्वाण की दिशा में कुछ आगे बढ़ा पाएं। हम जिस जगह कार्यरत हैं, वहां रहते हुए किस दिशा में आगे बढ़ें कि कैवल्य की प्राप्ति की ओर अग्रसर हो सकें?

आचार्यप्रवर--'मैंने जो कठोर साधना की बात बताई और जो कहा कि हम लोग वाहन आदि के संदर्भ में पुराणपंथी हैं। वह स्थिति आप गृहस्थों के लिए कठिन हो सकती है। आप तो नवीनपंथ में रहकर कुछ आगे बढ़ना चाहते हैं। इसके लिए आपका आचरण निर्मल रहना चाहिए। गृहस्थ को तो विभिन्न कार्य करने होते हैं, उनमें ईमानदारी रखने का प्रयास रहना चाहिए। झूठ बोलने से बचने का प्रयास करना चाहिए। आप रजिस्ट्रार के रूप में कार्य कर रहे हैं तो उसमें पूरी प्रमाणिकता रहनी चाहिए। उसमें भय या प्रलोभन नहीं होना चाहिए कि इसे राजी रखना, उसे राजी रखना। किसी के भय से विधान और नियम के विपरीत कार्य नहीं करना चाहिए। निर्भीकता के साथ ईमानदारी को महत्त्व देना निर्वाण की दिशा में आगे बढ़ने का एक उपाय है। दूसरी बात है--व्यक्ति को यथासंभव राग-द्वेष में ज्यादा नहीं जाना चाहिए। राग-द्वेष से यथासंभव बचाव रखना चाहिए। सबके प्रति सद्भावना और मंगल मैत्री की भावना रहनी चाहिए। तीसरी बात है--संयम। किसी प्रकार का नशा न हो। जिंदगी में सिगरेट, शराब आदि कोई भी नशा न हो और अन्य खान-पान में भी संयम हो। शरीर के लिए खाना और व्यवहार के लिए कपड़ा पहनना होता है, किन्तु इनमें आसक्ति नहीं, यथासंभव अनासक्ति का भाव रखने का प्रयत्न करना चाहिए। इन सभी के साथ थोड़ा समय साधना में भी लगाना चाहिए। कुछ समय ध्यान, जप व कुछ धार्मिक ग्रंथों का स्वाध्याय करें तो आप भी निर्वाण की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं।'

डॉ. विश्वजीत कुमार (नवनालन्दा महाविहार के अंतर्गत पालि विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर)--'पालि पढ़ने के क्रम में कई बार यह प्रश्न उठता है कि जैन, बौद्ध और हिन्दू इनका विभाजन कब हुआ और किसने यह विभाजन किया? ये तो भारतीय धर्म थे। हमने जो अब तक पढ़ा है, हो सकता है हमारी जानकारी अपूर्ण हो, आठवीं शताब्दी मुहम्मद बिन कासिम के पहले न जैन थे, न बौद्ध थे और न ही हिन्दू थे। अचानक भारतीय संस्कृति में इनको अलग कैसे कर दिया गया? क्या हो सकता है? आगमों में जैन शब्द नहीं है, पालि में भी नहीं है और वैदिक ग्रंथों में भी कहीं हिन्दू शब्द नहीं है, फिर ये विभाजन कहां से हुआ? इस पर थोड़ा प्रकाश डालें।

आचार्यप्रवर--'आपने कहा आठवीं शताब्दी से पहले जैन, बौद्ध, हिन्दू आदि कुछ नहीं था। महावीर और बुद्ध तो उस काल से पहले हो ही गए थे। शब्द नहीं मिले, ऐसा हो सकता है। आप कल्पना कीजिए कि भारत के बिहार-झारखंड में कोई साधक हुआ। उसने यहां की भाषा में अपने कुछ उपदेश दिए, कुछ बातें बताईं। उनके आसपास जो सुनने वाले लोग थे, उन्होंने वो रिकॉर्ड कर लीं, लिख लीं। उस साधक की वाणी के एक-दो ग्रंथ भी बन गए। वह चूंकि बिहार-झारखंड की एरिया में था तो यहां की भाषा में अपने उपदेश दिए थे। दूसरी ओर राजस्थान में कोई साधक हो गया। उसने भी साधना की, कुछ अनुभव किया और उसने राजस्थानी भाषा में भाषण दिए। वहां के लोगों ने उनके राजस्थानी भाषा के वचनों को ग्रहण किया, लिख लिया और ग्रंथ बन गए। इसी प्रकार कल्पना करें कि दक्षिण में भी कोई साधक हुआ और उसके उपदेशों से तमिल और कन्नड़ भाषा के ग्रंथ बन गए। विभिन्न भाषाओं में कुछ शब्दों का फर्क तो है ही। जो बात कही गई, हजार-दो हजार साल बाद उनका अनुवाद या व्याख्या हुई। व्याख्या करने वाले लोगों ने उसकी अपने ढंग से व्याख्या कर दी। मानों कि दूध में थोड़ा-थोड़ा पानी मिलता गया। उन लोगों ने उस समय जो कहा, हो सकता है उसमें काफी समानता रही हो। बाद में जो पीढ़ियां चलीं, व्याख्याकार होते गए और कुछ फर्क आता गया। थोड़ा फर्क हुआ, अलग-अलग संप्रदाय बनने लगे। संप्रदाय अलग होने से भेदरेखा खींच गई। हम श्वेताम्बर हैं तो हमने सफेद वस्त्र पहन रखें हैं और (सामने स्थित बौद्ध भिक्षुओं की ओर संकेत करते हुए) बौद्ध हैं तो इन्होंने गेरुआ कपड़े पहन रखे हैं। हम इसको नहीं छोड़ सकते और आप उसको नहीं छोड़ सकते। यह अलगाव मजबूत होता है तो दो अलग-अलग धाराएं बन सकती हैं। बाद में कभी-कभी आग्रह कह दें, थोड़ी पकड़ कह दें या अहंकार कह दें, बीच में आने से दूरियां और बढ़ सकती हैं। इसलिए उद्गम में जो चीज है, आगे बढ़ने के बाद उसमें कुछ फर्क आ सकता है।

ऐसा लगता है जो एकदम पहुंचे हुए लोग हुए हैं उनमें फर्क नहीं था, वे एक थे। उनके पीछे के लोगों ने भेद को ज्यादा पकड़ लिया होगा। इसके बावजूद आपस में सद्भावना रहे। हमारी उपासना पद्धतियां भिन्न-भिन्न हो सकती हैं, ग्रंथ कुछ अलग-अलग हो सकते हैं, किन्तु आज भी जैनों, बौद्धों और वैदिकों में अनेक बातों की समानता मिल सकती है और अनेक बातों में असमानता भी मिल सकती है। हम केवल भेद को ही न देखें, अभेद को भी देखने का प्रयत्न करें। तटस्थ अध्ययन करने से अभेद की भी अनेक बातें मिल सकती हैं।'

प्रो. हरपाल सिंह (पंजाबी युनिवर्सिटी में सिख दर्शन विभाग के प्रोफेसर)--'मैं यहां और किसी कार्य से आया था, किन्तु मेरी खुशकिस्मती है कि मैं आचार्यश्री के चरणों में बैठ पाया। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने हमारी युनिवर्सिटी को अपने चरणों से कृतार्थ किया था। मेरी जिज्ञासा यह है कि महाभारत में पढ़ा कि कृष्णजी के सामने अर्जुनजी ने नहीं लड़ने की भावना से हथियार फेंक दिए। फिर गीता का उपदेश हुआ और ज्ञान हो गया तो ज्ञान होने के पश्चात अर्जुन ने हथियार उठा लिए। दूसरी तरफ कलिंग में सम्राट अशोक ने युद्ध किया और युद्ध के बाद ज्ञान हुआ तो हथियार फेंक दिए। आचार्यश्री! आपसे मैं यह जानना चाहता हूं कि ज्ञानी

के लिए हथियार उठाना सही है या हथियार फेंकना?'

आचार्यप्रवर--'भगवद्गीता की बात आपने कही। गीता का प्रारंभ युद्ध की बात से हुआ है।

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः।

भगवद्गीता का कुछ आगे अध्ययन करें तो पता चलेगा कि युद्ध से शुरू हुई बात आत्मा तक पहुंच गई।

स्थितप्रज्ञस्य का भाषा समाधिस्थस्य केशव!
स्थितधीः किं प्रभाषेत किमासीत व्रजेत किम्।।
प्रजहाति यदा कामान् सर्वान् पार्थ! मनोगतान्।
आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते।।

यहां अध्यात्म की कितनी ऊंची बात आ गई। आगे श्रीकृष्ण कहते हैं--

योगस्थः कुरु कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा धनंजय!
सिद्ध्यसिद्ध्योः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते।।

यहां समता की बात आ गई। आत्मा के लिए कहा गया--

अच्छेद्योऽयमदाह्योऽयमक्लेद्योऽशोष्य एव च।
नित्यः सर्वगतः स्थाणुरचलोऽयं सनातनः।।

इस प्रकार युद्ध से शुरू हुई बात अनासक्ति और आत्मा तक पहुंच गई। हथियार फेंकना और उठाना--ये दोनों बाते सापेक्ष हैं। आप गृहस्थ हैं। मान लीजिए आपके सामने असमाजिक तत्व का कोई आदमी आ रहा है अथवा आपके विश्वविद्यालय में कोई आ रहा है और आपको यह लगे कि यह आएगा तो मेरे विद्यार्थियों को परेशान करेगा तो आप वहां क्या करेंगे? यदि आप यह सोचते हैं कि अरे यह गुंडा आ गया, मैं तो भागूं। वह भागना आपकी कमजोरी है। डर तो अपने आप में दुर्बलता है। वहां गृहस्थ होने के नाते अथवा विश्वविद्यालय के दायित्वशील व्यक्ति होने के नाते आपका धर्म है कि विश्वविद्यालय की रक्षा करें, विद्यार्थियों की रक्षा करें। उसके लिए यदि हथियार भी उठाने की अपेक्षा लगे तो गृहस्थ की भूमिका में सामने वाले के भय से हथियार न उठाना तो आपकी कमजोरी है। हथियार उठाना आपकी शूरवीरता और कर्त्तव्य का पालन हो सकता है।

श्रीकृष्ण ने कहा--अर्जुन!

क्लैब्यं मा स्म गमः पार्थ! नैतत्त्वय्युपपद्यते।
क्षुद्रं हृदयदौर्बल्यं त्यक्त्वोत्तिष्ठ परन्तप!।।

तुम क्लीबता को धारण मता करो। हे पार्थ! यह तुम्हारे लिए उपयुक्त नहीं है। मोह मत करो। अर्जुन का मोह था कि यह तो मेरे ही हैं। मेरे संबंधी हैं तो मैं इनसे क्या युद्ध करूं? मोह आ गया तो श्रीकृष्ण ने कहा कि मोह को छोड़ो। वहां हथियार उठाना भी व्यवहार की भूमिका में गृहस्थ के लिए सही बात हो सकती है। दूसरी ओर देखिए कि हम लोग साधु हैं। हम लोगों का धर्म है सहन करना, समता रखना। कोई असामाजिक तत्ववाला आदमी हाथ में लाठी लेकर आ गया, उस समय भी हथियार न उठाना, उसे सहन करना हम साधुओं का धर्म है। (पूज्यप्रवर ने मुनिवृंद की ओर इशारा करते हुए कहा--)किसी को मारने की भावना से हथियार या लाठी उठाना साधु के लिए पाप है, साधुत्व से च्युत होना है। इस प्रकार साधुओं के

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/15-17 Wed.-Thu.
L.No.-U (C) 200/2015-2017
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

लिए हथियार फेंकना ठीक है और आपके लिए, जो गृहस्थ की भूमिका में रहते हैं, हथियार न फेंकना गलत नहीं है।

श्रीकृष्ण कुमार पाण्डेय (प्रोफेसर, लाइब्रेरियन, नवनालन्दा महाविहार)--'हमें गर्व है कि हम ऐसे देश के निवासी हैं, जहां सत्य, अहिंसा और सदाचरण की बात होती है। जैनिज्म में अहिंसा पर विशेष बल दिया जाता है। मेरा प्रश्न यह है कि हिंसा से बचने के लिए हर तरह का प्रयास आप श्रमणों के द्वारा किया जाता है और आपने अभी बताया कि अहिंसा के लिए मुंह पर पट्टी बांधते हैं। मैं यह जानना चाहता हूं कि हर तरह की सावधानी के बाद भी किसी तरह की जीव हत्या हो जाती है तो उस समय आप लोगों की मनःस्थिति क्या होती है? और उसके लिए आप क्या पश्चाताप लेते हैं?

आचार्यश्री--'हम साधुओं का नियम है कि हमारे द्वारा हिंसा नहीं होनी चाहिए। अकस्मात कोई प्राणी या जीव पैर के नीचे आकर मर गया तो हमारी परंपरा है उस साधु को प्रायश्चित्त लेना होता है। जिस साधु से भूलवश चींटी की हिंसा हो जाए तो उसे तीन सौ गाथाओं का स्वाध्याय करना होता है। चींटी ही नहीं, एक सचित्त फूल पर पांव लग गया या गेहूं के दाने पर भी पैर लग गया तो उसका भी प्रायश्चित्त आता है। किस जीव की हिंसा हुई है, उसके हिसाब से हमारे विधान के अनुसार प्रायश्चित्त दिया जाता है।'

डॉ. विश्वजीत ने आभार ज्ञापन से पूर्व कहा--'मुझे लगता है कि अब नालन्दा पुनः जीवित होने वाला है। अभी कुछ ही दिन पूर्व यहां परम पावन दलाईलामा का आगमन हुआ। उस बात को एक माह भी पूरा नहीं हुआ कि आज परम पूज्य आचार्यश्री का यहां पदार्पण हुआ। महापुरुषों का आगमन इस बात का संकेत है कि नालंदा और नालंदा विश्वविद्यालय पुनः जीवित होगा।'

लोगों द्वारा प्रस्तुत जिज्ञासाओं के पूज्यप्रवर द्वारा प्रदत्त समाधान से उपस्थित लोग अत्यधिक प्रभावित हुए। कार्यक्रम के उपरान्त इस उपक्रम की श्लाघात्मक चर्चा यत्र-तत्र सुनाई दे रही थी। प्रो. हरपालसिंहजी ने कहा--'मैंने अपनी यह जिज्ञासा कइयों के सामने रखी, किन्तु आचार्यश्री से पहले इतना सटीक और स्पष्ट समाधान मुझे किसी ने नहीं दिया। मैं आज धन्य हो गया।'

मुनि मौलिककुमारजी (देशनोक-कोलकाता) गणमुक्त

९ मार्च २०१७ को मुनि मौलिककुमारजी (देशनोक-कोलकाता) गणमुक्त हो गए हैं। प्राप्त जानकारी के अनुसार उन्होंने गृहस्थवेश धारण कर लिया है।

पत्र व्यवहार की दृष्टि से हमारा पता है--

केशवप्रसाद चतुर्वेदी, प्रबन्धक-आदर्श साहित्य संघ, द्वारा-श्री हंसराज बेताला, शुजागंज बाजार, पो.भागलपुर-८१२ ००१ (बिहार)
शिविर कार्यालय का मोबाइल नं. ७२५८०६६६८७, ७२५८०६६५४५

●

स्वामी आदर्श साहित्य संघ के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक हेमराज बैद के द्वारा पवन प्रिंटर्स, जे-६, नवीन शाहदरा, दिल्ली ११००३२ से मुद्रित एवं आदर्श साहित्य संघ, अणुव्रत भवन, २१० दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली ११०००२ में प्रकाशित। सम्पादकः केशवप्रसाद चतुर्वेदी